9 अक्टूबर, 2016 को सेंट पॉल एच.एस., स्कूल ग्राउंडस इन्दौर में मदर टेरेसा को संत घोषित किए जाने के उपलक्ष्य में आयोजित किए जाने वाले समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

मदर टेरेसा को संत घोषित किए जाने के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में सम्मिलित होना, मेरे लिए अत्यधिक प्रसन्नता की बात है। मदर टेरेसा मानवता की दुनिया में करुणा, सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति थीं। यहाँ आप सबके बीच उपस्थित होने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं बिशप चाको और इंदौर के डॉयसिज को धन्यवाद देती हूँ।

भारत भूमि प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और साधू–संतों की भूमि रही है। ज्ञान, तप, लोक–कल्याण की भावना से परिपूर्ण जीवन जीते हुए यहाँ के संतों ने समाज एवं जीवन दोनों को सदैव दिशा दी। सभी प्राणियों में एक–दूसरे के प्रति दया, करुणा, प्रेम, सहिष्णुता एवं अहिंसा के भाव हमारे समाज के अन्तर्निहित मूल्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं। भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के आकर्षण, आध्यात्मिक उत्थान, ज्ञान एवं शिक्षा के उद्देश्य से सदैव यहां लोग आते रहे। ऐसे ही सिस्टर निवेदिता, एनी बेसेंट एवं मदर टेरेसा भी यहां आईं और यहीं की होकर रह गईं।

मित्रो, मदर टेरेसा के संबंध में सबसे आश्चर्यजनक बात है उनका साधारणत्व और इसी गुण ने उन्हें असाधारण बना दिया है। उनका जीवन सरल, सहज और आडंबररहित रहा। मदर टेरेसा के प्रिय शब्द थे ''God bless you''। उपेक्षित व वंचित लोगों की सेवा उनका मिशन रहा। इसके लिये कहीं जाने या किसी के आगे हाथ फैलाने में उन्हें कभी हिचक नहीं

हुई। उन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता, विशेष रूप से रोगियों, दीन–दुःखियों, वृद्धों और ज़रूरतमंदों की सेवा में समर्पित कर दिया। **उनका मानना था और मैं उसे उद्धृत करती हूं:–**

"We think sometimes that poverty is only being hungry, naked and homeless. The poverty of being unwanted, unloved and uncared for is greatest poverty. We must start in our own homes to remedy this kind of poverty."

हम सब सौभाग्यशाली हैं कि उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि के रूप में चुना और जीवन की विकट परिस्थितियों के बावजूद रोग, अवसाद, कष्ट और अलगाव से पीड़ित लोगों के जीवन में आशा का संचार किया और उनका मार्गदर्शन किया।

''के बोले तोमोरे बंधु अस्पृश्य अशुचि,

शुचिता फिरिछे सदा तोमारि।''

कवि की इस पंक्ति को संत टेरेसा ने प्रत्येक कर्म में प्राप्त किया जिसका अर्थ है, **''मेरे बंधु! तुमको अछूत गंदा कौन कहता है। शुचिता सदा तुम्हारे पीछे भागते रहती है।''**

उनका जन्म 26 अगस्त, 1910 में युगोस्लाविया में हुआ, 12 वर्ष की उम्र में उन्होंने नन बनने का निर्णय किया और 18 वर्ष में 1929 में कलकत्ता में आईरेश लोरेटो नन मिशनरी में शामिल होने का निर्णय लिया और उन्होंने बीस साल तक अध्यापन का काम किया। उन्होंने 10 सितम्बर, 1946 को कान्वेंट छोड़ दिया और निर्धन असहाय लोगों की सेवा का निर्णय लिया। 7 अक्तूबर, 1950 को उन्हें वैटिकन से ''मिशनरीज ऑफ चैरिटी'' की स्थापना की अनुमति मिल गई। उनकी लगन और सेवा के उद्देश्य से आज पूरा विश्व परिचित है।

उनकी छोटी–सी शुरूआत के बाद, उनके समर्पण से उनके मिशन का जो विस्तार हुआ, उससे हम सब परिचित हैं। इस सेवा और त्याग की मूर्ति ने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक सेवा कार्य को जारी रखा और अपने संगठन ''मिशनरीज ऑफ चैरिटी'' के माध्यम से पूरे विश्व को शांति और प्रेम के आध्यात्मिक प्रकाश से आलोकित किया। यह संगठन पूरे विश्व में सेवाएँ प्रदान कर रहा है और बीमार और बेसहारा लोगों के जीवन में उम्मीद की किरण ला रहा है।

Someone said and I quote:-

"Your opinion will not change the world, but your work and example will change the world."

मदर टेरेसा मानवता की साक्षात् प्रतीक थीं। इस असाधारण मानव प्रेम ने मदर टेरेसा के हृदय में ईश्वर के प्रति एक गहन विश्वास पैदा किया। इसी विश्वास का एक अनुपम उदाहरण 1962 में मिला था। उस समय उन्हें आगरा से एक टेलीग्राम मिला! वहां के मिशन में कार्य कर रहे लोगों ने उन्हें बताया कि आगरा में शिशु–भवन के निर्माण के लिए पचास हज़ार रुपये की ज़रुरत है। उस समय मदर टेरेसा के पास एक पैसा भी न था। इसीलिए उन्होंने जवाब दिया कि इतने रुपये देना उनके लिए संभव न होगा। यह सोचकर उन्हें दुःख भी हुआ कि पैसे की कमी की वजह से वे एक भला काम नहीं कर सकेंगी, लेकिन कोई और चारा न था। थोड़ी देर बाद फोन की घंटी बजी। दूसरी ओर से एक सज्जन की आवाज़ सुनाई पड़ी। उन्होंने बताया कि फिलीपीन्स सरकार उनको ''मैग्सेसे पुरस्कार'' के साथ नकद पचास हज़ार रुपए देंगी। टेलीफोन का रिसीवर रखकर मदर

टेरेसा ने हँसते–हँसते कहा, ''देखती हूँ कि भगवन् आगरा में शिशु निवास बनवाना चाहते हैं।'' इस सहज व सरल विश्वास ने ही मदर टेरेसा की अंतनिर्हित शक्ति को जाग्रत किया।

नीले किनारे वाली पट्टियां युक्त सफ़ेद साडी पहने और हृदय में ईसा मसीह का संदेश लिए, वे जीवन भर भलाई का काम मिशनरी भावना के साथ करती रहीं। यह उनके व्यक्तित्व की सरलता एवं निश्छलता को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति ऐसा पुनीत काम करता है तब वह देश, काल और समय से परे हो जाता है तथा उसकी प्रसिद्धि चहुंओर फैल जाती है। उनकी सेवा भावना को सम्मानित करते हुए उन्हें वर्ष 1980 में भारत का सर्वोच्च सम्मान ''भारत रत्न'' दिया गया। विश्व समुदाय ने भी उन्हें ''शान्ति का नोबेल पुरस्कार'' देकर उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन किया।

ऐसे ही एक समाजसेवी डॉ. मुरलीधर देवीदास आम्टे थे जिन्हें लोग प्यार से बाबा आम्टे के नाम से जानते हैं। उन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिए बहुत काम किया एवं आनंदवन आश्रम की स्थापना की एवं लोगों की जिन्दगी में सकारात्मक बदलाव लाये।

आज जब हमारे आस–पास आतंक एवं हिंसा के क्रूर वातावरण का निर्माण हो रहा है, उस परिदृश्य में ऐसी महान आत्मा के आदर्श हमें सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम और करूणा की ओर प्रेरित करने का काम करते हैं। संत टेरेसा में दृढ़ इच्छा शक्ति थी। इसी इच्छा शक्ति के कारण उन्होंने दीन–दुखियों की सेवा की। आज विश्व में फैले आतंकवाद, भूख, गरीबी और अशिक्षा के इस युग में सेवा, करुणा और प्रेम का संदेश ही सम्पूर्ण विश्व में मानवता को बचा सकता है।

संत टेरेसा मनुष्य के स्वभाव को बहुत गहराई से समझती थीं। मनुष्य प्रेम का भूखा है और दरिद्र को कोई प्रेम नहीं करता, यह वे बखूबी समझती थीं। दरिद्र की सेवा करने वालों की कमी है, यह वह अच्छे से जानती थीं। ऐसे ही लोगों के बीच वे प्रेम और करुणा का संदेश लेकर गईं और ऐसे दुःखी लोगों के जीवन को अपने प्रेम, करुणा और सेवा से आलोकित किया।

उन्होंने अपने सभी कार्यों से यह सिद्ध किया कि **मानव सेवा ही माधव सेवा है**। धर्म हमें दिव्यता की अनुभूति कराता है। संत टेरेसा ने हमें यह दिखाया कि दिव्यता की अनुभूति का सशक्त माध्यम मानवता की सेवा है।

सन्त के बारे में मैं कहना चाहूंगी कि जिसने अपने ''स्व'' का अन्त कर दिया, वह ही सन्त हो जाता है। सबसे निचले, दबे–कुचले एवं पिछड़े लोगों की सेवा करके उन्होंने सन्त जैसी महान पदवी हासिल की। यह बतलाता है कि सेवा का क्या महत्व है? उनके द्वारा जो कार्य किया गया है, वह अतुलनीय है।

अब वे वेटिकन सिटी की घोषित संत है। उनका जीवन हमारे लिए एक सीख है, शिक्षा है, आशा है, प्रेरणा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि उनके चमत्कार हमें आगे भी प्रेम और करुणा के सन्देश को फैलाने में सहयोग करेंगे। भारत के समकालीन इतिहास में वे अपने–आप में एक युग के समान थीं। उनका जाना एक युग के अंत होने के समान है, किंतु उनकी शिक्षाएं हमारे साथ सदैव रहेंगी।

मैं समुदाय की सेवा में डॉयसिज द्वारा किए गए जा रहे प्रयासों की सफलता की कामना करती हूँ। साथ ही, आशा करती हूं कि संत टेरेसा का सदाचारपूर्ण एवं प्रेरणादायी जीवन सभी के लिए प्रेरणास्रोत का काम करेगा।

अंत में, मैं उन्हीं की बातों को उद्धृत करते हुए अपनी बात समाप्त करती हूं:–

"Spread love everywhere you go. Let no one ever come to you without leaving happier."

धन्यवाद।

———